2 फरवरी 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 21 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

एक और स्तम्भ ढह गया

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अनन्य शिष्यों में से एक **विदिशा (म.प्र.) निवासी अध्यात्मरसिक, तत्त्वज्ञान पिपासु, ओजस्वी शैली व वात्सल्य के धनी, प्रखरवक्ता वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचंदजी जैन** का दिनांक 28 जनवरी को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। जीवन के अंतिम समय में अस्वस्थ होते हुए भी उन्होंने तत्त्वज्ञान के गहन चिंतन और अभ्यास को आत्मसात किया। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आपके निर्देशन में सिद्धक्षेत्र सोनागिर में कुन्दकुन्द नगर निर्मित हुआ। आपने श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट को दृढता प्रदान करने में सक्रिय भूमिका निभाई। आपके देहावसान से मुमुक्षु समाज का एक और स्तम्भ ढह गया।

इस प्रसंग पर पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 28 जनवरी को रात्रि में प्रवचनोपरान्त शोक सभा का आयोजन हुआ, जिसमें तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्री रमेशचंदजी जैन लवाण एवं श्रीमती कमला भारिल्ल मंचासीन थे।

सभा में डॉ. भारिल्ल ने पण्डित ज्ञानचंदजी के संबंध में अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि उन्होंने स्वयं की रुचि से ही तत्त्वज्ञान को प्राप्त किया और जीवनभर तत्त्वप्रचार के कार्य में संलग्न रहे; तत्त्वप्रचार का कार्य करते हुए भी कभी आत्मकल्याण की भावना का विस्मरण नहीं किया। अन्त में डॉ. भारिल्ल ने शीघ्र की सद्गति की प्राप्ति की भावना व्यक्त करते हुए अपना वक्तव्य पूर्ण किया।

मंचासीन अन्य सभी महानुभावों ने भी पण्डित ज्ञानचंदजी के संबंध में अपने विचार व संस्मरण प्रस्तुत किये। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयजी देवलाली द्वारा शोक सन्देश के रूप में भेजी गई कुछ पंक्तियाँ भी प्रस्तुत की गईं।

सभा का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

इसी प्रकार दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर (टोडरमलजी का मंदिर) में आयोजित शोक सभा के अन्तर्गत डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री निहालचंदजी जैन 'पीतल फैक्ट्री', श्रीमती प्रभा जैन आदि ने उनके योगदान को स्मरण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

अखिल भारतीय सकल मुमुक्षु समाज के द्वारा श्री बसन्तभाई दोशी का -

सम्मान समारोह संपन्न

हेरले (महा.) : यहाँ दिनांक 16 से 21 जनवरी तक संपन्न हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर अखिल भारतीय सकल मुमुक्षु समाज एवं दक्षिण प्रान्तीय शास्त्री परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में दिगम्बर जैनतीर्थ में अमूल्य योगदान देने वाले श्री बसन्तभाई दोशी का सम्मान समारोह संपन्न हुआ।

सर्वप्रथम श्री बसन्तभाई को प्रवेशद्वार से मंच तक बग्घी पर विराजमान कर गाजे-बाजे के साथ लाया गया। बग्घी के आगे दक्षिण प्रान्तीय स्नातक एवं मुमुक्षुगण चल रहे थे।

ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री एवं पण्डित रजनीभाई दोशी ने उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला और श्री विजयजी बड़जात्या ने अपने विचार व्यक्त किये। डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने श्री टोडरमल दिग.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के संचालन में आपके विशेष योगदान को स्मरण किया।

समारोह के अन्तर्गत पूर्व सांसद श्री कल्लाप्पाण्णा आवाडे एवं वर्तमान सांसद श्री राजू शेट्टी के करकमलों द्वारा अंगवस्त्र व प्रशस्ति-पत्र भेंटकर सम्मान किया गया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन श्री रामकस्तूरे बेलगांव ने किया। कार्यक्रम में सभी विद्वानों के साथ दिल्ली, इन्दौर, कोलकाता, बैंगलोर, मुम्बई, पुणे, नासिक, कारंजा, कोल्हापुर, डासाला, छिन्दवाड़ा, औरंगाबाद, इचलकरंजी आदि मुमुक्षु मण्डलों के प्रमुख मंचासीन थे। सभी ने आपका अभिनन्दन भी किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

दक्षिण प्रान्तीय शास्त्री परिषद् की ओर से डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील का -

सम्मान समारोह संपन्न

हेरले (महा.) : यहाँ दिनांक 16 से 21 जनवरी तक संपन्न हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अन्तर्गत दिनांक 18 जनवरी को विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री ने की। मुख्य अतिथि के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं विशिष्ट अतिथि श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई व श्री शांतिनाथजी पाटील कल्पवृक्ष उपस्थित थे। **(शेष पृष्ठ 3 पर...)**

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

22

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

किसी कवि ने कहा है –

तुष्टो हि राजा यदि सेवकेभ्यः, भाग्यात् परं नैव ददाति किंचित्।
अहिर्निशिं वर्षति वारिवाह तथापि पत्र त्रितयः पलाशः।।

राजा सेवक पर कितना ही प्रसन्न क्यों न हो जाये; पर वह सेवक को उसके भाग्य से अधिक धन नहीं दे सकता। दिन-रात पानी क्यों न बरसे, तो भी ढाक की टहनी में तीन से अधिक पत्ते नहीं निकलते।

यह पहला सिद्धान्त निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध की अपेक्षा है। इसका आधार जैनदर्शन की कर्म व्यवस्था है।

दूसरा सिद्धान्त 'वस्तु स्वातंत्र्य' का सिद्धान्त है जो कि जैनदर्शन का प्राण है। इसके अनुसार 'जगत का प्रत्येक वस्तु स्वभाव से ही स्वतंत्ररूप से परिणमनशील है, पूर्ण स्वावलंबी है।

जब तक यह जीव इस वस्तुस्वातंत्र्य के इस सिद्धांत को नहीं समझेगा और क्रोधादि विभाव भावों को ही अपना स्वभाव मानता रहेगा; अपने को पर का और पर को अपना कर्त्ता-धर्त्ता मानता रहेगा तबतक समता एवं समाधि का प्राप्त होना संभव नहीं है।

देखो, ''लोक के प्रत्येक पदार्थ पूर्ण स्वतंत्र और स्वावलम्बी हैं। कोई भी द्रव्य किसी परद्रव्य के आधीन नहीं है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता-भोक्ता भी नहीं है।'' ऐसी श्रद्धा एवं समझ से ही समता आती है, कषायें कम होती है, राग-द्वेष का अभाव होता है। बस, इसीप्रकार के श्रद्धान-ज्ञान व आचरण से आत्मा निष्कसाय होकर समाधिमय जीवन जी सकता है।

यहाँ कोई व्यक्ति झुँझलाकर कह सकता है कि – समाधि... समाधि... समाधि...? अभी से इस समाधि की चर्चा का क्या काम? यह तो मरण समय धारण करने की वस्तु है न? अभी तो इसकी चर्चा शादी के प्रसंग पर मौत की ध्वनि बजाने जैसी अपशकुन की बात है न?

नहीं भाई! ऐसी बात नहीं है, तुम्हें सुनने व समझने में भ्रम हो गया है, समाधि व समाधिमरण-दोनों बिल्कुल अलग-अलग विषय हैं। जब समाधि की बात चले तो उसे मरण से न जोड़ा जाय। मरते समय तो समाधिरूप वृक्ष के फल खाये जाते हैं; बीज तो समाधि अर्थात् समताभाव से जीवन जीने का अभी ही बोना होगा; तभी तो उस समय समाधिमरणरूप फल प्राप्त हो सकेगा। कहा भी है –

''दर्शन-ज्ञान-चारित्र को, प्रीति सहित अपनाय।
च्युत न होय स्वभाव से, वह समाधि फल पाय।।

समाधि तो साम्यभावों से निष्कषाय भावों से, निराकुलता से जीवन जीने की कला है, उससे मरण का क्या सम्बन्ध? हाँ, जिसका जीवन समाधिमय होता है, उसका मरण भी समाधिमय हो जाता है; मरण की चर्चा तो मात्र सजग व सावधान करने के लिए, शेष जीवन को सफल बनाने के लिए, संवेग भावना जगाने के लिए बीच-बीच में आ जाती है। सो उसमें भी अपशकुन जैसा कुछ नहीं है।

भाई मौत की चर्चा अपशकुन नहीं है, बल्कि उसे अपशकुन मानना अपशकुन है। हमें इस खरगोश वाली वृत्ति को छोड़ना ही होगा, जो मौत को सामने खड़ा देख अपने कानों से आँखें ढंक लेता है और स्वयं को सुरक्षित समझ लेता है। जगत में जितने भी जीव जन्म लेते हैं, वे सभी मरते तो हैं ही; परन्तु सभी जीवों की मृत्यु को महोत्सव की संज्ञा नहीं दी जा सकती, उनके मरण को समाधिमरण नहीं कहा जा सकता।

हाँ, जिन्होंने तत्त्वज्ञान के बल पर अपना जीवन भेदविज्ञान के अभ्यास से, निज आत्मा की शरण लेकर समाधिपूर्वक जिया हो, निष्कषाय भावों से, शान्त परिणामों से जिया हो और मृत्यु के क्षणों में देहादि से ममता त्यागकर समतापूर्वक प्राणों का विसर्जन किया हो; उनके उस प्राणविसर्जन की क्रिया-प्रक्रिया को ही समाधिमरण या मृत्यु-महोत्सव कहते हैं।

एतदर्थ सर्वप्रथम संसार से सन्यास लेना होता है। सन्यास अर्थात् संसार, शरीर व भोगों को असार, क्षणिक एवं नाशवान तथा दुःखरूप व दुःख का कारण मानकर उनसे विरक्त होना। सन्यास की सर्वत्र यही व्याख्या है। ऐसे संसार, शरीर व भोगों से विरक्त आत्म साधना के पथ पर चलनेवाले भव्यात्माओं को सन्यासी कहा जाता है। साधु तो सन्यासी होते ही हैं, गृहस्थों को भी इस सन्यास की भावना को निरन्तर भाना ही चाहिए।

'समाधि' के लिए निजस्वरूप की समझ अनिवार्य है। आत्मा की पहचान, प्रतीति व श्रद्धा समाधि का प्रथम सोपान है। सच्चे-देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा उसमें निमित्त होती है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक् चारित्र रूप मोक्षमार्ग पर अग्रसर होकर सन्यासपूर्वक ही समाधि की साधना संभव है। सम्यग्दर्शन अर्थात् वस्तुस्वरूप की यथार्थ श्रद्धा, जीव, अजीव, आस्रव बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष तथा पुण्य-पाप आदि सात तत्त्व अथवा नौ पदार्थों की सही समझ, इनमें हेयोपादेयता का विवेक एवं सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा अनिवार्य है। इसके बिना सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संभव नहीं है। सन्यास व समाधि भी इसके बिना संभव नहीं है।

तत्वों का मनन, मिथ्यात्व का वमन, कषायों का शमन, इन्द्रियों का दमन, आत्मा में रमण- यही सब समाधि के सोपान हैं। वस्तुतः - कषाय रहित शान्त परिणामों का नाम ही तो समाधि है।

शास्त्रीय शब्दों में कहें तो -''आचार्य जिनसेन कृत महापुराण के इक्कीसवें अध्याय में कहा है – 'सम' शब्द का अर्थ है एकरूप करना, मन को एकरूप या एकाग्र करना। इसप्रकार शुभोपयोग में मन को एकाग्र करना समाधि शब्द का अर्थ है।''

इसीप्रकार भगवती आराधना में भी समाधि के सम्बन्ध में लिखा है -''सम शब्द का अर्थ है एकरूप करना, मन को एकाग्र करना, शुभोपयोग में मन को एकाग्र करना।

आचार्य कुन्दकुन्द कृत नियमसार गाथा १२२ में समाधि की चर्चा करते हुए कहा है कि ''वचनोच्चारण की क्रिया का परित्याग कर वीतरागभाव से जो आत्मा को ध्याता है, उसे समाधि कहते हैं।'' **(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 व 17 फरवरी	**पद्मपुरा**	**पत्रकार सम्मेलन**
22 से 24 फरवरी	**जयपुर**	**वार्षिकोत्सव**
5 से 10 अप्रैल	**गुना**	**पंचकल्याणक**
19 मई से 5 जून	**सूरत**	**प्रशिक्षण शिविर,**
7 जून से 7 जुलाई	**विदेश**	**तत्त्वप्रचारार्थ**
7 से 14 जून	शिकागो	
14 से 21 जून	न्यूजर्सी	
21 से 28 जून	डलास	
28 जून से 7 जुलाई	लॉस एन्जिल्स	
2 से 11 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**

सह-सम्पादक की कलम से...

एक और अपूरणीय क्षति

वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचंदजी का अवसान मुमुक्षु समाज की एक ऐसी अपूरणीय क्षति है जिसकी पूर्ति दुर्लभ है।

वे आत्मार्थी, स्वाध्यायी विद्वान थे, जिन्होंने बिना किसी व्यवस्थित शिक्षण के भी मात्र अपने अध्यवसाय से विद्वत्ता अर्जित की और तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभाव से दिगम्बर जैन समाज में औपचारिक शिक्षा प्राप्त पारंपरिक विद्वानों के अतिरिक्त अनेकों स्वाध्यायी विद्वानों की एक ऐसी फौज तैयार हुई, जिसने समाज में नयी आध्यात्मिक चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पण्डित ज्ञानचंदजी का नाम उक्त विद्वानों की सूची में अग्रिम पंक्ति में आता है।

अपनी सरल, सुबोध, अनूठी प्रवचन शैली ने उन्हें समाज में एक लोकप्रिय प्रवक्ता के रूप में स्थापित किया और समाज द्वारा उन्हें 'वाणीभूषण' की उपाधि से विभूषित किया गया।

आप पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त थे और उनकी प्रेरणा से स्थापित ''श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट'' के उत्थान में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

एक प्रभावशाली वक्ता के अतिरिक्त आप एक ऐसे आदर्श श्रोता भी थे जो सभी समकालीन विद्वानों के प्रवचनों को बड़े ही मनोयोग से सुनते थे और सम्पूर्णतया ग्रहण करने का प्रयास करते थे। ऐसे ही प्रवचनों पर आधारित उनके नोट्स की डायरी आज जिज्ञासुओं के लिये महत्वपूर्ण धरोहर है।

सिद्धक्षेत्र सोनागिर में उनके द्वारा स्थापित संकुल समाज के लिये उनकी एक और महत्वपूर्ण देन है।

वे आत्मार्थी थे व जीवनभर आत्मकल्याण हेतु प्रयत्नशील रहे, हम कामना करते हैं कि मुक्तिवधु शीघ्र ही उनका वरण करे।

जैनपथप्रदर्शक परिवार और पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करता है। ॐ शान्ति।

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

(पृष्ठ 1 का शेष...)

गोष्ठी में अनेक शास्त्री विद्वानों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। तत्पश्चात् श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील का सम्मान समारोह गाजे-बाजे के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने मनोगत व्यक्त करते हुए कहा कि विगत 35 वर्षों से डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील पण्डित टोडरमल स्मारक में सेवाएं देते आ रहे हैं। समयसार की टीका आत्मख्याति को संस्कृत पंक्ति से पढाने की इनकी सूक्ष्म व गंभीर शैली प्रशंसनीय है।

उपस्थित सभी स्नातकों के द्वारा अपना-अपना संक्षिप्त परिचय दिया गया। मंगलाचरण पण्डित श्रेणिक कोरेभावे शास्त्री हेरले एवं आभार प्रदर्शन पण्डित वीतराग वसवाडे शास्त्री द्वारा किया गया। संचालन पण्डित जिनचंदजी शास्त्री ने पण्डित महावीरजी पाटील शास्त्री के निर्देशन में किया।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की वार्षिक –

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 2 जनवरी से 14 जनवरी 2019 तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

उद्घाटन सभा के अवसर पर श्री कालीचरणजी सर्राफ (विधायक), श्री इन्द्रचंदजी कटारिया, श्री सुरेन्द्रकुमारजी बज, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी उखलकर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रतीक जैन विदिशा ने एवं स्वागत गीत अनुभव जैन खनियांधाना ने प्रस्तुत किया।

सभी प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार है –

(1) अनिवार्य भाषण प्रतियोगिता – दिनांक 2 जनवरी को प्रात:काल आयोजित इस प्रतियोगिता में रजत जैन कापरेन ने प्रथम एवं अनेकान्त जैन बांसा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का विषय उपाध्याय वर्ग हेतु 'अहिंसा : महावीर की दृष्टि में' एवं शास्त्री वर्ग हेतु 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जैनधर्म' था। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे। निर्णायक पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित गौरवजी उखलकर थे। संचालन पीयूष जैन मड़ावरा व जितेन्द्र जैन अमरमऊ ने किया।

(2) भजन प्रतियोगिता – दिनांक 2 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में संयम जैन देशमाने ने प्रथम एवं रजत जैन कापरेन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रकाशचंदजी जैन जयपुर ने की। निर्णायक विदुषी परिणति पाटील, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री थे। संचालन सिद्धार्थ जैन लुकवासा एवं दीपक जैन बकस्वाहा ने किया।

(3) अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता – दिनांक 3 जनवरी को प्रात: हुई इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शाश्वत जैन भोपाल एवं द्वितीय स्थान समर्थ जैन विदिशा ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष श्रीमती गुंजा पाटनी थीं। निर्णायक पण्डित अनेकान्जी भारिल्ल व विदुषी प्रतीति पाटील थे। संचालन प्रतीक जैन विदिशा एवं शाश्वत जैन बड़ामलहरा ने किया।

(4) अंत्याक्षरी प्रतियोगिता – दिनांक 3 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में स्वानुभव जैन खनियांधाना व संयम जैन पुजारी ने प्रथम तथा अर्पित जैन भगवां व आकाश जैन मौ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा एवं मुख्य अतिथि श्री हीराचंदजी बैद थे। निर्णायक विदुषी प्रतीति पाटील व पण्डित नीशूजी शास्त्री थे। संचालन देवांश जैन अमरमऊ व जितेन्द्र जैन अमरमऊ ने किया।

(5) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग) – दिनांक 4 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में यश जैन खुरई ने प्रथम एवं समर्थ जैन हरदा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने की। निर्णायक पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी थे। संचालन रजत जैन कापरेन व प्रांजल जैन प्रतापगढ ने किया।

(6) श्लोक पाठ प्रतियोगिता – दिनांक 4 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में संयम पुजारी ने प्रथम एवं संयम जैन दिल्ली ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष वाई.एस. रमेशजी (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) एवं मुख्य अतिथि डॉ. श्रीयांसजी सिंघई थे। निर्णायक श्री कृष्णदेवजी शुक्ल थे। संचालन सपन जैन सागर एवं पीयूष जैन टडा ने किया।

(7) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग) – दिनांक 5 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में समर्थ जैन विदिशा ने प्रथम एवं पल त्रिवेदी गांधीनगर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल थे। निर्णायक के रूप में पण्डित पीयूषजी शास्त्री व श्री शीतलजी सेठी उपस्थित थे। संचालन प्रतीक जैन विदिशा व अनुभव जैन खनियांधना ने किया।

(8) काव्यपाठ प्रतियोगिता – दिनांक 5 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में संयम जैन गुढाचन्द्रजी ने प्रथम एवं पीयूष जैन टडा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्ष के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे। निर्णायक डॉ. भागचंदजी शास्त्री थे। संचालन अनुभव जैन खनियांधाना व पीयूष जैन टडा ने किया।

(9) संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता – दिनांक 6 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में दुर्लभ जैन गुढचन्द्रजी ने प्रथम एवं यश जैन खुरई ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील थे। निर्णायक डॉ. प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ थे। संचालन नयन जैन बरायठा व शाश्वत जैन बड़ामलहरा ने किया।

(10) शलाका प्रतियोगिता – दिनांक 6 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में अरिहंत जैन भिण्ड ने प्रथम एवं पवित्र जैन आगरा व आप्तअनुशीलन जैन दमोह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. संजीवजी गोधा एवं मुख्य अतिथि श्री कैलाशचंदजी सेठी थे। निर्णायक के रूप में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना उपस्थित थे। संचालन प्रांजल जैन प्रतापगढ व शाश्वत जैन बड़ामलहरा ने किया।

(11) नाट्य प्रतियोगिता – दिनांक 12 जनवरी को रात्रि में आयोजित इस प्रतियोगिता में 'प्रेरणा संघर्ष की (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने प्रथम एवं आधुनिकता का अभिशाप (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं मुख्य

अतिथि डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे। निर्णायक के रूप में श्री मनोजजी स्वामी एवं श्री अनिलजी मारवाड़ी उपस्थित थे। संचालन सचिन जैन दलपतपुर ने किया।

(12) शोधपत्र वाचन प्रतियोगिता – दिनांक 13 जनवरी को प्रात: हुई इस प्रतियोगिता में दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने प्रथम एवं अमन जैन आरोन व यश जैन खुरई ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित अरुणजी बण्ड ने की। निर्णायक के रूप में डॉ. ज्योति सेठी एवं पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन शाश्वत जैन बड़ामलहरा व प्रांजल जैन प्रतापगढ ने किया।

(13) निबन्ध प्रतियोगिता – दिनांक 13 जनवरी को दोपहर में आयोजित इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग के अन्तर्गत सर्वज्ञ जैन गुढाचन्द्रजी एवं शास्त्री वर्ग में समर्थ जैन विदिशा ने स्थान प्राप्त किया।

(14) चित्रकला प्रतियोगिता – दिनांक 15 जनवरी को दोपहर में हुई इस प्रतियोगिता में प्रजल जैन खनियांधाना ने प्रथम एवं पीयूष जैन टडा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित नीशूजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन विनीत जैन मुम्बई व पीयूष जैन टडा ने किया।

खेलकूद प्रतियोगिताएं

इसी क्रम में दिनांक 8 से 17 जनवरी तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' गीत के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्रीमंतजी नेज, श्री विजयजी शास्त्री चाकसू आदि महानुभाव उपस्थित थे। दिनांक 8 जनवरी को श्री रतनदीप क्रिकेट स्टेडियम जगतपुरा में श्री प्रदीपजी-आशीषजी जैन बापूनगर परिवार के द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन हुआ।

क्रिकेट प्रतियोगिता में विजेता आत्मन् (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं उपविजेता भूतपूर्व टीम रही। **बॉलीवॉल प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर जयगोमटेश (शास्त्री द्वितीय वर्ष) तथा द्वितीय स्थान पर वर्तमान टीम रही। **कबड्डी प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर स्वर्णिम (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर जयगोमटेश (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रही। **स्लो साइकिल प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर प्रांजल जैन प्रतापगढ तथा द्वितीय स्थान पर समर्थ जैन विदिशा रहे। **तस्तरी फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर धनुष जैन कांचीपुरम् एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन चेन्नई रहे। **तीन पैर दौड़ प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर शाश्वत जैन भोपाल व हितंकर जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान पर आप्तअनुशीलन जैन दमोह व अचिंत्य जैन बण्डा रहे। **शतरंज प्रतियोगिता** प्रथम स्थान पर समर्थ जैन विदिशा एवं द्वितीय स्थान पर आप्तअनुशीलन जैन दमोह रहे। **कैरम प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर ममित जैन फुटेरा एवं द्वितीय स्थान पर मयंक जैन लखनादौन रहे। **कैरम प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर ममित जैन फुटेरा व चेतन जैन खड़ैरी एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन चेन्नई व आयुष जैन पिपरिया रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर हितंकर जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान पर पीयूष जैन टडा रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर संभव जैन दिल्ली व हितंकर जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन चेन्नई व आयुष जैन पिपरिया रहे। **दौड़ प्रतियोगिता रिले (4X100)** में प्रथम स्थान पर आयुष जैन, जगदीशन, चेतन प्रकाश, अक्षत तथा द्वितीय स्थान पर लक्षित जैन, पीयूष जैन, शाश्वत जैन, सचिन जैन एवं सम्मेद पाटील, सोहम शाह, यश रत्तू, सिद्धांत चौगुले की टीम रही। **दौड़ प्रतियोगिता (100 मीटर)** में प्रथम स्थान यश रत्तू बेलगांव एवं द्वितीय स्थान आयुष जैन पिपरिया, **दौड़ प्रतियोगिता (200 मीटर)** में प्रथम स्थान चेतन प्रकाश गुढाचन्द्रजी एवं द्वितीय स्थान यश रत्तू बेलगांव, **दौड़ प्रतियोगिता (400 मीटर)** में प्रथम स्थान सिद्धांत चौगुले ने एवं द्वितीय स्थान हितंकर जैन उदयपुर ने प्राप्त किया। **ऊंचीकूद प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान जगदीशन चेन्नई एवं द्वितीय स्थान आयुष जैन पिपरिया ने प्राप्त किया। **रस्सीकूद प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान हितंकर जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान प्रतीक जैन विदिशा ने प्राप्त किया। **लम्बीकूद प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान आयुष जैन पिपरिया एवं द्वितीय स्थान जगदीशन चेन्नई ने प्राप्त किया। **गोला फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान आयुष जैन पिपरिया एवं द्वितीय स्थान मयंक जैन लखनादौन ने प्राप्त किया।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ●

Talk with Toppers संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में आचार्य धरसेन दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय एवं समन्तभद्र विद्यानिकेतन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 16 से 22 जनवरी तक विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित चर्चितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा क्रमश: निमित्त-उपादान, गुणस्थान, सर्वार्थसिद्धि व न्यायदीपिका विषय पर कक्षाएं ली गईं। साथ ही विद्यार्थियों हेतु विशिष्ट व्याख्यानों का भी लाभ मिला। रात्रि में विविध सैद्धांतिक प्रश्नों के माध्यम से सामूहिक चर्चा का आयोजन हुआ।

अंतिम दिन परीक्षा का आयोजन हुआ, जिसमें उपाध्याय कनिष्ठ से पारस जैन फुटेरा ने प्रथम व पीयूष जैन खड़ैरी ने द्वितीय स्थान; उपाध्याय वरिष्ठ से शुभम जैन मझगुआं ने प्रथम व संयम जैन घुवारा ने द्वितीय स्थान; शास्त्री प्रथम वर्ष से विपिन जैन किशनपुरा ने प्रथम व विशेष जैन कन्नपुर ने द्वितीय स्थान; शास्त्री द्वितीय वर्ष से अभिषेक लोधी और विवेक जैन बण्डा ने प्रथम व अक्षय जैन लाखेरी ने द्वितीय स्थान एवं शास्त्री तृतीय वर्ष से आकाश जैन बांदकपुर ने प्रथम व सिद्धांत जैन सुरखी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **– धर्मेन्द्र शास्त्री, कोटा**

... तथा राग-द्वेष-मोहरूप जो आस्रव हैं, उनका तो नाश करने की चिन्ता नहीं और बाह्य क्रिया अथवा बाह्य निमित्त मिटाने का उपाय रखता है, सो उनके मिटाने से आस्रव नहीं मिटता। **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 227**

मुमुक्षु समाज में –

ऐतिहासिक दो पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाएं युगपत् संपन्न

(1) हेरले (महा.) : यहाँ शौरीपुर नगर में सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट–हेरले, सर्वोदय फाउण्डेशन–कोल्हापुर एवं दक्षिण प्रान्तीय मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री 1008 नेमीनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बुधवार, दिनांक 16 जनवरी से सोमवार 21 जनवरी, 2019 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा पंचकल्याणक संबंधी प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित नीलेशजी मुम्बई, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, विदुषी धवलश्री पाटील, ब्र.सुजाता रोटे, पण्डित जिनचन्द्रजी शास्त्री, ब्र. श्रेणिकजी, ब्र.मनोजजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री आदि के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में संपन्न हुआ। सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में ब्र. श्रेणिकजी, ब्र. मनोजजी जबलपुर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित आदित्यजी सनावद, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ, श्री संजयजी उपाध्ये, श्री राजेन्द्रजी उपाध्ये, श्री सुभाषजी उपाध्ये, श्री राजूजी उपाध्ये उपस्थित थे।

बालक नेमीकुमार के माता–पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती मंजुला–जितमलजी जैन मुम्बई को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी श्री सिद्धार्थ–चेतना काला कोलकाता, कुबेर इन्द्र–इन्द्राणी श्री महावीर–सरोजिनी गाठ हुपरी थे। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री अजितजी पिराले बेलगांव ने, सिंहद्वार उद्घाटनकर्त्ता श्री राजेशजी पाटील परिवार हेरले, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्रीमती भावना दिलीप शहा एवं यागमण्डल उद्घाटन डॉ. आमगोंडा पाटील इचलकरंजी ने किया।

दिनांक 18 जनवरी को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री शिवकुमारजी काला कोलकाता को मिला। पालना उद्घाटन राधिका काला कोलकाता ने एवं सर्वप्रथम आहारदान पण्डित नीलेशभाई पूनमचंदजी शहा एवं श्री नाथालालजी वेलीचंदजी शहा परिवार मुम्बई ने किया।

मूलनायक भगवान नेमीनाथ के भेंट व विराजमानकर्ता श्री शिवकुमारजी काला परिवार कोलकाता थे। इस पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर और आकर्षक 80 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 5000 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर–घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

(2) ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ जी.वाई.एम.सी. परिसर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ के संयुक्त मार्गदर्शन में मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर ग्वालियर के तत्त्वावधान में तिघरा में नवनिर्मित श्री दिगम्बर जैन सीमन्धर जिनालय का श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बुधवार, दिनांक 16 जनवरी से सोमवार 21 जनवरी, 2019 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रतिदिन प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के मंच संचालन व निर्देशन में संपन्न हुआ। सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पण्डित रमेशजी जैन सनावद, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर उपस्थित थे। कार्यक्रम के सह–निर्देशक पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर थे।

बालक पार्श्वकुमार के माता–पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती रीता–सुशील जैन ग्वालियर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी श्री धीरेन्द्र–सोनिया जैन कोलकाता एवं कुबेर इन्द्र–इन्द्राणी श्री अमित–सुरभि जैन ग्वालियर थे।

दिनांक 18 जनवरी को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री अंकुशजी पाटनी कोलकाता को मिला। सायंकाल मैनपुरी से आया हुआ 45 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री अनिलजी बोहरा व श्री अंकुशजी पाटनी कोलकाता ने एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री वज्रसेन मनोजकुमार जैन ग्वालियर ने किया।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। दिनांक 20 जनवरी को ज्ञानकल्याणक के दिन **सूरिमंत्र** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा ने की। गोष्ठी का संचालन डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने किया। वक्ताओं में पण्डित विरागजी शास्त्री, डॉ. योगेशजी, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के सारगर्भित वक्तव्य का लाभ मिला।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 12 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर–घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।●

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

सादि-अनादि निगोद से, कुछ काल को निकले अरे,
लौट जाता फिर वहीं, जो शिवरमा को ना वरे।
गति चार में आवागमन, औ भगवान तेरी हार है,
संसार में यूं भटकना,क्या तुमको स्वयं स्वीकार है।।१।।

सुर, नर्क, पशु, नर देह में, रूप क्या-क्या ना धरे,
पर द्रव्य में नित रत रहा, जाना नहीं निज को अरे।
ना जान निज, पर में रमण, औ भगवान तेरी हार है,
यूं संसार का बढना अरे, क्या खुद तुम्हें स्वीकार है।।२।।

गति चार में नर देह पाना, दुर्लभ अरे यह योग है,
नर देह में जिनवचन का, सबको कहाँ संयोग है।
सुनने अहो सद्भाग्य से, जिनको मिलें जिनवर वचन,
टिकें ना संसार में वे, मिट जाये उनका भव भ्रमण।।३।।

जन्म को सौभाग्य या, दुर्भाग्य मृत्यु को मानना,
मृत्यु बिन किस तरह करता, जन्म की तू कल्पना।
है दोष जो मृत्यु अरे तो, जन्म भी तो विकार है,
ध्रुवधाम के आराधकों को, दोनों नहीं स्वीकार है।।४।।

मर-मरके हम जीते अरे, जीवन मरण समान है,
रे मृत्यु नहीं है अंत तेरा, यह व्यर्थ ही बदनाम है।
जीवन हूँ मैं, मैं जीव हूँ, अविरल ये जीवन धार है,
तब क्यों डरे तू मौत से, व जन्म से क्यों प्यार है।।५।।

नहीं चाहता मरना यदि तू, शिवरमा का वरण कर,
यह मोक्ष अंतिम लक्ष्य है, यह पूर्णता सब दोष हर।
आवागमन के अंत में ही, इस जीव का उद्धार है,
पर न जाने क्यों तुझे बस, परिभ्रमण से ही प्यार है।।६।।

तू मौत से डरता रहा, चलता रहा जीवन मरण,
निज आत्मा बिन कौन है, इस लोक मैं तेरा शरण।
तू स्वयं से रहता विमुख, बढता रहे संसार है,
संसार में यूं भटकना क्या, तुझको स्वयं स्वीकार है।।७।।

प्रतिपल हमारे यत्न सब, दुःख मेटकर सुख खोज के,
सुख मानकर कुछ दुःखों को, सुख नामसे दुःख भोगते।
सच्चे सुखों का ज्ञान करना, सबसे प्रथम उपचार है,
संसार के दुःख भोगना, अब मुझको नहीं स्वीकार है।।८।।

संसार के इन सब दुःखों में, सुखों की की कल्पना,
क्या किसी की चाह से, विष कुम्भ अमृतमय बना।
सुख तू दुःखों में खोजता, इस बुद्धि को धिक्कार है,
सुख मानता तू कुछ दुःखों को, दुःख से कहाँ इंकार है।।९।।

कुछ ही पलों में दुःखी करते, सुख मानकर जो भोगता,
फिर भी अरे, फिर से अरे, उनमें मरा मन डोलता।
ओ मूर्ख कुछ तू विचार कर, इक बार सो सौ बार,
इक बार जो दुःखदाई है, उसे सुख मानना बेकार है।।१०।।

नित भोग में रमता रहा, भ्रमता रहा संसार में,
लेकिन नहीं ये सुखी करते, यह प्रकट है व्यवहार में
फिर भी उन्हीं से आश करना, मूढता व्यवहार है,
चिरकाल की यह मूढता क्या, अब भी तुझे स्वीकार है।।११।।

पकवान यदि आनंद देते, क्यों न निशदिन तू भखे,
सुखमय है निद्रा-जागरण तो, क्यों न उनमें रत रहे।
पर ऊबकर कुछ ही पलों में, क्यों विरत होना चाहता,
थक-हार कर फिर क्यों उन्हें, तू हर बार पाना चाहता।।१२।।

(क्रमशः)

2 फरवरी 2019, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

श्री जिनबिंब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

डासाला (बुलढाणा) : यहाँ श्री 1008 तीर्थंकर महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर का जीर्णोद्धारपूर्वक ऐतिहासिक व दर्शनीय पुनर्निर्माण किया गया। इसके लिए श्री 1008 आदिनाथ, महावीरस्वामी, सीमन्धर एवं पंचबालयति तीर्थंकर जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन दिनांक 22 से 24 दिसंबर 2018 तक किया गया।

इस प्रसंग पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री निम्बाहेड़ा, पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस प्रसंग पर इंद्रसभा, माता-देवी चर्चा, 56 कुमारिका एवं अष्टदेवियों के नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्री कुशल व श्री मयूर जैन पुणे द्वारा भक्ति, कु. श्वेतल व कु. काव्या सुनीलकुमार जैनापुरे राजकोट द्वारा विशेष जिनेंद्र भक्तिसंध्या प्रस्तुत की गई। मुमुक्षु महिला मंडल डासाला द्वारा निमित्त-उपादान नाटिका का मंचन किया गया।

दिनांक 23 दिसंबर को श्री यागमंडल विधानपूर्वक वेदीशुद्धि संपन्न की गई। इस महोत्सव में मुंबई, बुलढाणा, चिखली, खामगांव, वरुड, औरंगाबाद, विहिगाव, बोरगांव, रिसोड, डोणगांव, हराल, वाशिम, नागपुर, वर्धा, यवतमाल, मलकापुर, अमरावती, कारंजा, पुसद आदि नगरों से लगभग 5000 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे के साथ पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी सिद्धार्थी व पण्डित उज्ज्वलजी बेलोकर द्वारा संपन्न कराए गए।

ध्यान रहे !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 53वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर रविवार, दिनांक 19 मई से बुधवार, 5 जून 2019 तक सूरत (गुज.) में आयोजित होने जा रहा है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा

सातवाँ वार्षिक महोत्सव

दिनांक 22 फरवरी से 24 फरवरी 2019 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का सातवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 24 फरवरी 2019 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसी अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का विदाई एवं दीक्षांत समारोह भी आयोजित किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com